



सत्यमेव जयते

खेतीबाड़ी

उन्नीसवाँ अंक

सितम्बर, 2007

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हुए हैं बायें से पत्रिका के परामर्शी श्री फैसल इमाम, श्री उदय शंकर प्रसाद, पत्रिका के संरक्षक श्री गौतम गुहा एवं परामर्शी श्री रमेश प्रसाद कंठ ।

खड़े हैं बायें से श्री अजित कुमार सिन्हा, स०ले० अधिकारी, जी०डी०, श्री एस०भी०के० चिन्नम, महालेखाकार महोदय के सचिव, पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री विनोद प्रसाद साह तथा सम्पादक श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' ।



सत्यमेव जयते

चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका
उन्नीसवाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन,

वीर चन्द पटेल मार्ग, पटना-800001

चेतना

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना ।

प्रकाशन : चेतना

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का
कार्यालय, महालेखाकार भवन, वीर चन्द पटेल मार्ग,
पटना-800001

अंक : उन्नीसवाँ
(सितम्बर 2007)

मूल्य : राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा

मुद्रक : तन्या प्रेस, राजवंशी नगर, पटना-23
फोन : 2282217, मो0-9835490016

चेतना

चेतना परिवार

संरक्षक

श्री गौतम गुहा

महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति

श्री उदय शंकर प्रसाद

वरिष्ठ उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री फैसल इमाम

उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री रमेश प्रसाद कंठ

कल्याण अधिकारी-सह- उप महालेखाकार,
बिहार, पटना।

प्रधान सम्पादक

श्री विनोद प्रसाद साह

लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

सम्पादक

श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर'

अनु० अधि०(प्र०), हिन्दी कक्ष

चेतना

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना	लेखक	पृष्ठ सं०
1.	चेतना परिवार			
2.	अनुक्रमणिका			
3.	महालेखाकार का संदेश			
4.	वरिष्ठ उप महालेखाकार(प्रशा०/पेन०) का संदेश			
5.	उप महालेखाकार (लेखा एवं भी०एल०सी०) का संदेश			
6.	कल्याण अधिकारी-सह-उपमहालेखाकार (जी०ई० एवं निधि) का संदेश			
7.	सम्पादकीय			
8.	महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी गतिविधियाँ-2006-2007	रिपोर्ट	हिन्दी कक्ष	1
9.	महाकवि विद्यापति	लेख	श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'	4
10.	आशा से निराशा	कहानी	श्री सुनील कुमार अम्बष्ट	10
11.	सुरेश ना सुरेशवा	संस्मरण	श्री हरे राम प्रधान	14
12.	भाग्य का निर्माण कर्म से	कविता	श्री दीपक दयाल प्रसाद	17
13.	फैलाव के बीच संकुचन	निबन्ध	श्री दयानन्द प्रसाद	18
14.	नूरे यार	गजल	श्री शिव शंकर तिवारी	22
15.	कौन जीता, कौन हारा	कहानी	श्री रामाधार राय	23
16.	क्या खूब चुटकुले	हास्य-व्यंग्य	श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'	31
17.	आयुर्वेदिक दवाएँ	चिकित्सा	श्री रामेश्वर राम	33
18.	बाढ़ की विभीषिका	निबन्ध	श्री राणा प्रताप सिंह	37
19.	हिन्दी पखवारा समारोह, 2006	रिपोर्ट	हिन्दी कक्ष	42

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ, रचनाकारों के निजी विचार हैं। रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार हैं। रचनाओं में व्यक्त विचारों से महालेखाकार कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-प्रधान सम्पादक

चेतना



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का संदेश

मझे हार्दिक खुशी है कि इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' अविलम्ब अपने उन्नीसवें अंक में प्रकाशित होने जा रही है। यह पत्रिका हिन्दी के प्रति निष्ठा का एक सुन्दर उदाहरण है। आज हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा के रूप में समस्त देश को एकता की कड़ी में पिरोने का कार्य कर रही है। 'चेतना' भी देश को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास करेगी—यही मेरी मंगल कामना है। वस्तुतः, हिन्दी के सर्वांगीण विकास के लिए राजकाज में, सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक-से-अधिक प्रयोग करना हम सबका कर्तव्य है।

पत्रिका के प्रकाशन और सम्पादन से जुड़े हुए सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि हमारे कार्यालय के सभी लोग राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा करते रहेंगे। 'चेतना' प्रगति पथ पर अग्रसर होती रहे—यही मेरी शुभकामना है।

गौतम गुहा
महालेखाकार



सत्यमेव जयते

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा०/पेन०), बिहार, पटना का संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के उन्नीसवें अंक का शीघ्र प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका हिन्दी के विकास में एक सराहनीय कदम है।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए चेतना परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। उन्हें मेरी हार्दिक बधाई! आशा है, सरकारी कामकाज में हिन्दी को इससे प्रोत्साहन मिलेगा और हमलोग अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी का अधिक-से-अधिक प्रयोग करके इसके विकास में अपना योगदान देंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं सतत प्रकाशन हेतु विपुल शुभकामनाएँ!

उदय शंकर प्रसाद

वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)

उप महालेखाकार (लेखा एवं भी०एल०सी०),
बिहार, पटना का

संदेश

इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के उन्नीसवें अंक के प्रकाशन पर मुझे दिली खुशी हो रही है। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक तथा पठनीय हैं। आशा है, यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी में मौलिक लेखन प्रतिभा को प्रोत्साहन प्रदान करने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

आखिर में, मैं पत्रिका की अहर्निश प्रगति के लिए, उसके निरन्तर प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

फैसल इमाम

उप महालेखाकार (लेखा एवं भी०एल०सी०)

कल्याण अधिकारी-सह-उप महालेखाकार
(जी०ई० एवं निधि) का

संदेश

इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के उन्नीसवें अंक के प्रकाशन से मुझे अतिशय प्रसन्नता हो रही है।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ स्तरीय, ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए यह प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के संपादक मंडल, सभी रचनाकार एवं प्रकाशन से जुड़े लोग बधाई के पात्र हैं। उन सबों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

पत्रिका की अविरल प्रगति एवं अनवरत प्रकाशन के लिए मेरी बहुत-बहुत मंगल कामनाएँ!

रमेश प्रसाद कंठ

कल्याण अधिकारी-सह-उप महालेखाकार
(जी०ई० एवं निधि)

सम्पादकीय.....

‘हिन्दी दिवस’ पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ‘चेतना’ के उन्नीसवें अंक को सुधी एवं सहृदय पाठकों के कर-कमलों में समर्पित करते हुए मुझे अति हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है ।

प्रिय बांधवों, सरकारी कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने तथा इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है । आज हमारी राजभाषा संक्रमण काल से गुजर रही है । क्षिप्र गति एवं वेग से हो रहे तकनीकी विकास के कारण नित-नूतन शब्दों का प्रचलन एवं प्रयोग किया जा रहा है । आज हमें यह समझना होगा कि ये नव-नूतन शब्द किसी देश विशेष के नहीं, बल्कि समस्त विश्व के हैं । आज हिन्दी विश्व भाषा है, इसलिए हमें भी विश्व की अन्य भाषाओं के साथ ताल में ताल मिलाकर चलना सीखना होगा ताकि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में हमारी हिन्दी भी आन-बान-शान से अपनी गरिमा एवं गौरव की पताका लहरा सके - फहरा सके ।

पिछले 58 सालों में राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की प्रगति उल्लेखनीय हुई है, किन्तु लक्ष्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से पूर्णतः संतोषजनक नहीं । हम भारतवासी शायद यह भूल जाते हैं कि भाषा का विकास उसके बोलने-पढ़ने-लिखने से होता है, उसके अनवरत प्रयोग से होता है न कि सिर्फ यह कहते रहने से कि हमें हिन्दी के विकास के लिए ये करना चाहिए, वो करना चाहिए । अतः हमें सदैव यह याद रखना होगा कि भाषा की समर्थता, जीवंतता, सहजता एवं सफलता का मूल मंत्र है-सतत, अबाध और सहज-स्वाभाविक गति से प्रतिदिन हिन्दी बोलने, पढ़ने और लिखने की आदत डालना ।

तो आइये, आज ‘हिन्दी दिवस’ के परम पावन सुअवसर पर हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि हम अपना सारा काम राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही करेंगे, अपना सारा सरकारी काम राजभाषा हिन्दी में ही

करेंगे । साथ ही हम यह संकल्प भी लें कि हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु पुनः आत्मसमीक्षा करेंगे तथा राजभाषा पूर्णतः पुष्पित-पल्लवित हो, इसके लिए मार्ग में आनेवाली व्यावहारिक कठिनाइयों को दूर करने पर गम्भीरता से चिन्तन करेंगे ।

इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हमारा यह अनुरोध है कि वे अपनी रचनाएँ-कथा, संस्मरण, लेख, निबन्ध, कविता तथा कार्यालय कार्य-कलाप से संबंधित रचनाएँ प्रत्येक माह नियमित रूप से 'हिंदी कक्ष' को देते रहें ताकि पत्रिका का समय पर प्रकाशन होता रहे । इस दिशा में हम सबों का यह कर्तव्य होता है कि इस पत्रिका को अधिकाधिक उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक बनाने का प्रयास करें ।

साथ ही हमारे सुधी पाठकों से भी सादर अनुरोध है कि उन्हें यह पत्रिका कैसी लगी, वे कृपया अपने विचारों, सुझावों एवं मार्गदर्शन से हमें वंचित नहीं करें । इसके अलावा इस पत्रिका को और उपयोगी, रोचक और पठनीय बनाने में अपनी रचनाओं से इसे अलंकृत करने की महती कृपा करने का कष्ट करें । हम उनकी इस सहभागिता के लिए अनुगृहीत रहेंगे ।

अंत में, हिन्दी के प्रेमी एवं संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री गौतम गुहा तथा परामर्शदातृ समिति के सदस्यों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके अपार स्नेह के आलोक में यह पत्रिका प्रकाशित होती रही । पत्रिका के सुन्दर चित्रांकन एवं सफल प्रकाशन के लिए मैं श्री अजित कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी को विस्मृत नहीं कर सकता । उन्हें 'चेतना परिवार' की ओर से कोटिशः धन्यवाद । नये दायित्व-बोध एवं सहयोग के संकल्प के साथ सभी पाठकों और रचनाकारों को हार्दिक बधाई ।
जय हिन्द, जय हिन्दी ।

- नरेन्द्र सिंह 'नाहर'

कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं ह०), बिहार, पटना में हिन्दी गतिविधियाँ - 2006-2007

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिसमें हिन्दी के प्रयोग के लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं तथा इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है। इस वर्ष महालेखाकार (लेखा एवं ह०), बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्नलिखित है :-

1. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन -

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत कुल 696 दस्तावेज जारी किये गये जिनमें हिन्दी में 500 तथा द्विभाषी में 196 थे। कोई भी आदेश केवल अंग्रेजी में जारी नहीं किया गया।

2. हिन्दी पत्राचार :

वर्ष 2006-2007 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 1,15,665 थी जिनमें से 95,936 के उत्तर हिन्दी में भेजे गये। शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा भेजे गए कुल पत्रों की संख्या 96212 थी। कुल भेजे गये पत्रों में से हिन्दी पत्रों की प्रतिशतता 99.71% थी।

3. राजभाषा कार्यान्वयन समिति :

उक्त वर्ष में रा०का०स० की नियमित तिमाही बैठकें सम्पन्न हुईं। नियमतः वर्ष के दौरान 4 बैठकें आयोजित की गईं जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श कर अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4. हिन्दी कार्यशाला :

इस वर्ष इस कार्यालय में 8 हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गईं जिनमें कार्यालय के 47 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया ।

5. हिन्दी पुरस्कार योजना :

वर्ष 2006 में इस कार्यालय के 30 अधिकारियों/ कर्मचारियों को हिन्दी पुरस्कार योजना के अन्तर्गत मूल टिप्पण एवं आलेखन के लिए हिन्दी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया । यह पुरस्कार 'हिन्दी दिवस' के पावन अवसर पर प्रदान किया गया ।

6. हिन्दी पखवारा समारोह का आयोजन :

इस कार्यालय में वर्ष 2006 के दौरान 01 सितम्बर, 2006 से 15 सितम्बर 2006 तक हिन्दी पखवारा समारोह का वृहत आयोजन किया गया । पखवारा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा- हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, हिन्दी काव्य-पाठ प्रतियोगिता, संक्षेपण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता तथा कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गई । विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया । 'हिन्दी दिवस' के सुअवसर पर 'कवि-गोष्ठी' भी आयोजित की गई तथा हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के अठारहवें अंक का लोकार्पण भी किया गया ।

7. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति :

इस कार्यालय ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दो छमाही बैठकों में भाग लिया । बैठकों में इस कार्यालय ने राजभाषा कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन की समीक्षा में अपने विचार व्यक्त किये । इस कार्यालय ने राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम के अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की सूचना समिति को दी ।

8. हिन्दी शिक्षण योजना :

इस कार्यालय में अधिकारियों/ कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 100 अधिकारी एवं 534 कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं। इस कार्यालय में 07 आशुलिपिक हैं जो हिन्दी में प्रशिक्षित हैं। यहाँ 40 टंकक हैं जिनमें 39 हिन्दी में प्रशिक्षित हैं तथा 01 टंकक प्रशिक्षणाधीन है।

9. हिन्दी पुस्तकों की खरीद :

इस कार्यालय में 2006-07 के दौरान पुस्तकों के क्रय पर कुल 74,825/-रु० व्यय किया गया जिनमें से हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर 5000/-रु० व्यय किया गया जो कि लक्ष्य से कम है। इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

10. हिन्दी टिप्पण :

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है। वर्ष 2006-2007 के दौरान इस कार्यालय में कुल 25683 फाइलें खोली गईं जिनमें से 25428 फाइलों में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गईं।

इस प्रकार, इस कार्यालय ने कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतम लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है। अतः राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए समीक्षा की जाती रही है। आशा है, आगामी वर्षों में शत-प्रतिशत लक्ष्यों की पूर्ति की जा सके।



“भारत से विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी-प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत-बन्धु हैं।”

- अरविंद घोष

महाकवि विद्यापति

-नरेन्द्र सिंह 'नाहर'

मैथिल-कोकिल कवि विद्यापति हिन्दी साहित्य के 'वीरगाथा काल' एवं 'भक्ति काल' की सन्धि -रेखा के कवि हैं। विद्यापति हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक विवादास्पद कवि है। इनको लेकर जितने विवाद उठ खड़े हुए हैं, उतने किसी अन्य कवि के साथ नहीं। पहला विवाद उनके जन्म काल को लेकर है। कतिपय आलोचक उन्हें 'वीरगाथाकाल' का कवि मानते हैं तो कुछ आलोचक उन्हें 'भक्तिकाल' के प्रारंभिक चरण के कवि मानते हैं। भाषा की दृष्टि से चाहे वे वीरगाथाकाल की प्रवृत्ति के पोषक रहे हों, पर विषय की दृष्टि से वे वीरगाथा काल की तुलना में 'भक्तिकाल' के कवि अधिक सिद्ध होते हैं। समग्रतः उन्हें वीरगाथा एवं भक्तिकाल की सन्धि रेखा का कवि माना जा सकता है। दूसरा विवाद भाषा को लेकर है। प्रारंभ में यह विवाद उठ खड़ा हुआ था कि विद्यापति बंगला के कवि थे अथवा हिन्दी के। विद्यापति के प्रति जिज्ञासा एवं श्रद्धा का उद्रेक पहले बंगाली सहृदयजनों में दृष्टिगोचर हुआ। निःसन्देह उन लोगों ने कवि की रचनाओं से मुग्ध होकर उन्हें अपना बनाने का दावा भी पेश किया। बाद में मैथिली का विवाद और दावा आ गया। इस दावे में बहुत तथ्य था। यह अन्ततः सिद्ध हो ही गया कि विद्यापति मैथिल भाषा के कवि हैं। मैथिली के कुछ अधिक निकट होने के कारण बंगला भाषा-भाषियों का दावा आज तक चलता आ रहा है। हिन्दी की एक बोली होने के कारण, मैथिली से अधिक सन्निकटता हिन्दी को उपलब्ध है। अतः विवादों से घिरे होने के बावजूद

एक सहज, स्वाभाविक निष्कर्ष निकल आया है कि विद्यापति मूलतः मैथिली के कवि हैं। तीसरा विवाद उनके धार्मिक विचारों से सम्बद्ध है। कुछ आलोचक उन्हें शैव सिद्ध करते हैं, कुछ वैष्णव, क्योंकि विद्यापति ने शंकर के साथ-साथ विष्णु की भी आराधना की है। इनके पिता गणपति ठाकुर शैव थे और विद्यापति के जन्म के संबंध में यह बात प्रसिद्ध है कि उनके पिता ने शक्ति की उपासना करके वरदान स्वरूप पुत्र-रत्न की प्राप्ति की थी। चौथा विवाद इस बात पर है कि उन्हें भक्ति का उपासक माना जाय या विलास और श्रृंगार का गायक। डॉ० शिव प्रसाद सिंह के शब्दों में, “वस्तुतः विद्यापति शुद्ध भावनाधर्मी कवि थे जिनके सामने धार्मिक मान्यताओं का घेरा कोई महत्व नहीं रखता।” प्रो० आनन्द नारायण शर्मा के विचारानुसार “भक्ति और श्रृंगार दोनों परस्पर विरोधी नहीं। दोनों के मूल में रति वर्तमान है। इस देश के पूर्वी अंचल में बहुत पहले से लीला-गान की एक ऐसी परिपाटी प्रचलित थी जिनमें अपने आराध्य के श्रृंगारिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने में कवि को कोई संकोच नहीं होता था। जयदेव कवि का ‘गीत गोविन्द’ इसी शैली की रचना है, जिसमें एक साथ ही कवि ने हरि स्मरण और विलास कला दोनों की भूमिका बाँधी है। विद्यापति भी इसी परम्परा के प्रतिनिधि हैं। उनका आदर्श था “धम्म सहित सिंगार रस कब्ब कला बड़रंग।” वस्तुतः विद्यापति श्रृंगारिक कवि थे। मानव-मन के उद्याम भावों को, प्रेम और सौन्दर्य की छवियों को, व्यथा और संवेदना की सम्पूर्ण आतुरता और व्यग्रता से व्यक्त करने वाले महाकवि विद्यापति हिन्दी सहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र थे। उनके स्वरों की व्यथा आज भी कम नहीं हुई। युगों की सीमा लाँघकर आज भी उनकी पीड़ा का उच्छ्वास हमें एक अलौकिक विश्व में पहुँचा देता है। मिथिला

की अमराइयों में पलने वाले इस महाकवि ने अपनी 'पदावली' में अपने प्रदेश के सामाजिक जीवन का जितना जीवंत और सच्चा उद्घाटन सहज भाव से किया है उतना अन्य कोई कवि नहीं कर सका। सामाजिक रूढ़ियों, युग-प्रचलित अन्धविश्वासों, विषमताओं और जीवन की कुरीतिपूर्ण असंगतियों का उन्मुक्त भाव से कथन भी इनकी कविता में प्राप्त होता है। अनमेल विवाह की प्रचलित प्रथा पर, बहु-पत्नीत्व के सामाजिक अभिशाप पर और उससे त्रस्त "कुलवन्ती नारी" की विवश मूक वेदना पर कवि विद्यापति ने अत्यन्त प्रभावोत्पादक ढंग से संवेदना व्यक्त की है। ये चित्रण अतिशय कारुणिक, वेदना आपूरित एवं मर्मस्पर्शी हैं। इनमें सामाजिक पीड़ा भी है और चुमता हुआ व्यंग्य भी।

मैथिल-कोकिल कविवर विद्यापति हिन्दी के कालजयी महाकवियों में है। इनका जन्म 1375 ई० के आसपास मिथिला के बिसफी ग्राम में हुआ था। उनके पिता गणपति ठाकुर थे, जो मिथिला के महाराज गणेश राय के राजपंडित एवं कवि थे। अपने गौरवमय वंश की ख्याति के अनुरूप ही विद्यापति भी थे। वे संस्कृत, अवहट्ट एवं मैथिली भाषा के पंडित थे एवं इन भाषाओं की रचनाओं के समर्थ लेखक थे। सबसे बढ़कर, विद्यापति सुकंठ कवि थे तथा मिथिला की संस्कृति एवं उसकी शालीन परम्परा के अद्वितीय गायक थे।

विद्यापति मिथिला के राजा शिवसिंह की राजसभा में राजकवि थे। महारानी लखिमा देवी के वे विशेष कृपापात्र थे। अपनी अशेष कवि-प्रतिभा के सम्मान में उन्हें अनेक उपाधियाँ प्राप्त हुई थी। इनमें कुछ प्रमुख हैं- 'अभिनव जयदेव', 'कविशेखर', 'रसिक शिरोमणि', 'सुकविकंठहार', 'कविरत्न' इत्यादि। संस्कृत और अवहट्ट भाषाओं के

प्रकांड पंडित होने के बावजूद वे लोकभाषा के हिमायती और उसके माधुर्य के प्रशंसक थे। अपने इसी विश्वास के अनुसार उन्होंने कहा था- “देसिल बयना सब जन मिट्ठा ।”

कविवर विद्यापति ने संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली में अनेकानेक रचनाएँ की हैं, जिनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं:-

1. संस्कृत - भू-परिक्रमा, शैवसर्वस्वसार, दानवाक्यावली, दुर्गाभक्तितरंगिणी इत्यादि।
2. अवहट्ट - कीर्तिलता, कीर्तिपताका।
3. मैथिली - पदावली।

अनेक रचनाओं के प्रणयन के बावजूद कविवर विद्यापति की अमर ख्याति एवं लोकप्रियता का आधार उनकी मैथिली में रचित ‘पदावली’ ही है। ‘पदावली’ में विभिन्न राग-रागिनियों में बंधे उनके पदों का सुन्दर संकलन है। विनय-भक्ति के कुछ पदों को छोड़कर प्रायः ये सभी शृंगार पद हैं। इन पदों में श्रीकृष्ण और राधा नायक-नायिका के रूप में चित्रित हैं। सुकवि विद्यापति ने उनकी प्रेम-लीलाओं का तन्मय होकर गायन किया है। उनमें भावनाओं का उदगार इतना सहज, सरल और स्वाभाविक है कि सहृदय पाठकों का मन मुरझा जाता है।

कविवर विद्यापति मूलतः शृंगारी कवि होते हुए भी उच्च कोटि के भक्त कवि भी है। राधा-माधव उनके आराध्य देवी-देवता हैं। पर, इनके अतिरिक्त वे शिव, पार्वती, गंगा आदि की भी उतनी ही भक्ति भावना के साथ स्तुति करते हैं। उनकी काव्य-वाणी ‘गंगा स्तुति’ में लोक भाषा की मिठास अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ प्रस्फुटित हुई है।

उदाहरणार्थ-

एक अपराध छेमब मोर जानी ।

परसल माय पाय तुअ पानी ॥

कि करब जप -तप जोग धेयाने ।

जनम कृतारथ एकहि सनाने ॥

विद्यापति एक समर्थ गीतकार थे। उनमें प्रबन्धकार की पटुता नहीं थी, बल्कि गीतकार की सफल प्रतिभा थी। उनके गीतों में हृदय की अनुभूति और संगीत की झंकृति का मणिकांचन संयोग है। भाव और भाषा के मिले-जुले वैभव का सौन्दर्य इतना है कि सहज ही उनके गीत पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। उनके गीतों की सस्वरता, उनमें छिपी हुई व्यथा-पीड़ा की रागिनी-आज भी वायुमंडल में भरी पड़ी है। काव्य-सौष्ठव एवं प्रेम सौन्दर्य की दिव्य अनुभूतियों के सरल उच्छवास की मार्मिकता और सफलता का सबसे बड़ा कारण यह है कि विद्यापति ने कहीं भी अपने स्वरों में राजनीतिक कटुता या सामाजिक व्यंग्य की कठोरता का समावेश नहीं होने दिया है। उनके स्वरों में न तो कोई विराट संदेशवाहक का तथाकथित बड़प्पन है और न तो धार्मिक माहात्म्य का गुणगान करने वाले किसी सम्प्रदायवादी कवि की कट्टरता ही है। निष्कर्षतः विद्यापति प्रेम, सौन्दर्य, भक्ति और माधुर्य के सफल गीतकार हैं। उनकी अमर रचना 'पदावली' प्रेम और सौन्दर्य का खूबसूरत गिटारा है, जिसमें सुन्दरता ही सुन्दरता है, मधुरता ही मधुरता है। जिस तरह कामदेव के हाथों में फूलों के बाण हैं, चन्द्रमा के तूणीर में शुभ्र किरणों के पुंज हैं, उसी तरह विद्यापति के पास उनकी कोमल-कान्त पदावली है। कितना समय व्यतीत हो गया, कितनी रमणियाँ अपने सौन्दर्य की छाया इस विश्व की चित्रशाला पर अंकित

कर गई, उनके सम्बन्ध में आज हमें कुछ भी नहीं मालूम, परन्तु विद्यापति की मधुर तान कभी क्षीण नहीं हुई और न कभी क्षीण होगी। विद्यापति के पात्र अनन्त काल तक जन्म लेते रहेंगे और राजा शिवसिंह के पास बैठे गाते रहेंगे और लखिमा देवी मुस्कुराती रहेंगी तथा काव्य धारा शृंगार के फूलों को स्पर्श करती रहेगी। डॉ० ग्रियर्सन के शब्दों में, “हिन्दू धर्म का सूर्य अस्त हो सकता है, वह समय भी आ सकता है जब कृष्ण में विश्वास और श्रद्धा का अभाव हो जाय, कृष्ण प्रेम स्तुतियों के प्रति, जो भवसागर के रोग की दवा है, विश्वास जाता रहे तो भी विद्यापति के गीतों के प्राण जिनमें राधा और कृष्ण के प्रेम का वर्णन है, लोगों की आस्था और श्रद्धा कभी कम नहीं होगी।” निःसन्देह सौन्दर्य और प्रेम के उन्मत्त गायक मैथिल-कोकिल विद्यापति हिन्दी के रस-सिद्ध महाकवि थे।



“कवि सृष्टि के सौन्दर्य का एक मर्मज्ञ वक्ता, गायक और कलाकार होता है। वह एक ऐसा यन्त्र है जिसके माध्यम से सृष्टि का सौन्दर्य निहारा जा सकता है।”

—शरण

“आशा से निराशा”

- श्री सुनील कुमार अम्बष्ट,
स० ले० अधिकारी

एक छोटा रेलवे स्टेशन जहाँ गाड़ियाँ आते ही शोर मच जाता था । आओ बाबू मेरे रिक्शे पर आ जाओ । इस रिक्शा स्टैण्ड के बगल में रेलवे का छोटा-छोटा क्वार्टर उसमें रहते थे एक हरि बाबू । हरि बाबू रेलवे में गार्ड थे । उन्हें सात पुत्र थे । पुत्रों को पढ़ा-लिखा कर बड़ा आदमी बनाने की उनकी इच्छा थी और आशा करते थे कि बच्चे जब पढ़ लिख कर अच्छे पदों पर जाँयेगे तो खुशी के दिन लौट आयेंगे । बेचारे हरि बाबू की एक मात्र आदत थी ब्रीज खेलना । बच्चे हमारे ठीक से पढ़ाई करें, उन्हें कोई कष्ट न हो इसके लिए वे ओभर टाईम भी करते । अपना फटा पुराना जूता को नहीं बदलते, लेकिन बच्चों को कोई कष्ट नहीं होने देते । सातों बच्चों को पढ़ाने में उनका हाथ हमेशा खाली रहता, लेकिन इस उम्मीद से हरि बाबू खुश रहते कि बहुत जल्द ही खुशी के दिन लौटने वाले हैं ।

हरि बाबू का बड़ा लड़का सीधा-साधा एवं ईश्वर पर विश्वास रखने वाला था । पढ़ा-लिखा जो एक राजपत्रित पदाधिकारी बनना चाहता था लेकिन बन न सका तो काला कोट पहन कर कचहरी का चक्कर लगाने लगा ।

दूसरा पुत्र रीतेश पढ़ने में तेज, लेकिन पिता के दुःख दर्द की चिन्ता नहीं करनेवाला था । रीतेश को प्रत्येक दिन कॉलेज जाते वक्त दस रुपये नाश्ता के लिए चाहिए । चाहे घर में चूल्हा जले या नहीं । बाजार में कोई नई किस्म का कपड़ा आता कि अमीर बच्चों की तरह उसे भी वह वस्त्र चाहिए था । अगर पिता कहते-बेटा, मेरी गरीबी पर

ध्यान दो, 'सादा जीवन उच्च विचार' के सिद्धान्त पर चलो तो यह सुनते ही रीतेश को गुस्सा आ जाता और किताब, सामान घर से बाहर फेंकना शुरू कर देता । थक हार के हरि बाबू दुकानदार से उधार वस्त्र खरीद कर देते थे । वहीं पर दूसरे छोटे भाई साधारण कपड़ा में खाली पॉकेट स्कूल -कॉलेज जाता । शेष पाँच बच्चों को पिता की मेहनत एवं कम आय का अहसास था । वे पढ़ते थे पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर, एक दो बच्चों को ट्यूशन पढ़ा कर । वहीं पर रीतेश ने शान से तृतीय श्रेणी में स्नातक विज्ञान की परीक्षा उत्तीर्ण की । उस वक्त कम्प्यूटर की पढ़ाई केवल कोलकाता में होती थी । रीतेश को एक नशा-सा सवार हुआ । उसने अपने पिता से कहा कि मुझे कम्प्यूटर की पढ़ाई करनी है, मुझे कोलकाता जाना है । हरि बाबू ने कहा कम्प्यूटर का युग आने में अभी समय है । भारत जैसे देश में यह नहीं लगेगा । लेकिन, रीतेश ने अपने पिता की एक नहीं मानी और अन्ततः हरिबाबू को कम्प्यूटर की पढ़ाई कराने हेतु मानना पड़ा । बेचारे हरिबाबू ने सूद पर पाँच हजार रुपया लेकर प्रिय पुत्र रीतेश को कम्प्यूटर की पढ़ाई कराने कोलकाता भेजा । रीतेश एक छोटा शहर का रहने वाला गरीब बाप का रईस पुत्र था जो कोलकाता के बड़े मकानों एवं सुन्दर वस्त्रों में सजी नारी को देख कर मस्त हो गया । कम्प्यूटर कॉलेज में प्रवेश लिया एवं एक मकान में बड़ा-सा रूम लेकर रहने लगा नया विषय कम्प्यूटर की पढ़ाई में उसे मन कम लगने लगा ज्यादा मन इत्रों की सुगंध में लगने लगा । पिता से हर माह पाँच सौ रुपया लेता और कोलकाता शहर में गुलछर्रे उडाने लगा । रीतेश का कोलकाता में एक लड़की से गलत संबंध हो गया जिस से शादी करने का वादा कर लिया एवं बात बिगड़ते देख पढ़ाई छोड़ कर भाग निकला । घर लौटकर पिता को उल्टा -सीधा समझा कर घर में बैठे रहता एवं इधर-उधर घूमता रहता । हरि बाबू के अन्य छोटे बच्चों ने इधर-उधर सरकारी नौकरी पकड़ ली, लेकिन श्री रीतेश कुमार का कार्य ही था स्टेशन पर इधर-उधर घूमना एवं गलत कामों में हाथ बँटाना ।

हरिबाबू थक मार कर रीतेश की शादी करने का मन बना लिये। उसी शहर के एक मुहल्ले में रहने वाले राम बाबू ने अपनी बेटी की शादी रीतेश से करने की हामी भर दी। जब लड़की देखने की बात आयी तो हरिबाबू के घर के किसी भी व्यक्ति को लड़की पंसद नहीं पड़ी लेकिन हरिबाबू जानते थे की रामबाबू एक राजपत्रित पदाधिकारी हैं उसकी लड़की देखने में अच्छी नहीं है तो क्या हुआ मेरे बेटे की जिन्दगी तो बन जायगी। हरिबाबू ने धूम-धाम से बेटा की शादी कर दी। रीतेश को रईसी करने की आदत बचपन से थी, इसलिए अपने पिता का घर छोड़ ससुराल में जा बसा। समय गुजरता गया। रीतेश के एक पुत्र हुआ। पुत्र होते ही उसके सासु माँ ने दवा की लिस्ट हाथ में दे दी। यह बेरोजगार क्या करता। दौड़ा हुआ पिता के पास आया पिता ने फिर उसे पैसा दिया और कहा तुम्हारे ससुर ने इतना दिन तुम्हें साथ में रखा, लेकिन नौकरी नहीं दिला सके। अरे बेटा, कुत्ता भी अपना पेट पाल सकता है। अब तो तुम घर लौट आओ। लेकिन रीतेश नहीं लौटा।

सीधा-साधा हरिबाबू को एक दिन रेल गाड़ी में उस शहर के समाहर्ता से मुलाकात हुई। हरिबाबू ने समाहर्ता साहब के चरण पकड़ लिये एवं अपने पुत्र को नौकरी देने हेतु अनुरोध किया। समाहर्ता साहब को हरिबाबू की दयनीय स्थिति देख दया आगई और उनके पुत्र को समाहरणालय में लिपिक के पद पर नौकरी दे डाली।

हरिबाबू बहुत खुश रहने लगे। क्यों न खुश होते, अब उनके सभी पुत्र अपने पैर पर खड़ा हो चुके थे। सभी बच्चों के पास से होली, दशहरा में कपड़ा आता। बच्चे अपने वेतन से कुछ पैसा भेजते, लेकिन उनका लाड़ला बेटा रीतेश उन्हें कुछ नहीं भेजता। हरि बाबू ने सोचा कि रीतेश जब न तब मुझसे ही पैसा ले जाता है। हो सकता है कि उसे कोई कष्ट हो।

एक दिन हरिबाबू ने छुट्टी ली और चल पड़े अपने लाइला से मिलने । जब अपने पुत्र के किराये के मकान के पास पहुँचे तो अच्छे पकवान की सुगन्ध आते देख हरिबाबू खुश हो गये । उन्हें लगा कि मेरे आने की खबर सुन कर मेरा पुत्र स्वादिष्ट भोजन बनवा रखा है । जब रूम के अन्दर हरिबाबू पहुँचते हैं तो खुश हो जाते हैं । उनके समधी भी आये हुए थे । दोनों एक-दूसरे से मिले । कुछ देर बातचीत हुई । हरिबाबू बार-बार बहू की ओर देख रहे थे कि कब भोजन लेकर मेरे पास रखेगी । थोड़ी देर में देखते हैं कि उनकी बहू-भोजन लेकर आती है और अपने पिता के पास भोजन रखती है । समधी ने ज्यों ही समधी को आवाज दी कि आइये समधी साहब, साथ-साथ खाया जाय कि हरिबाबू की बहू ने अपने पिता से कहा कि आप पहले खा लें फिर मैं ससुर जी को खाना खिलाऊँगी । ससुर जी दूर से आये हैं । स्नान तो कर लिजिए । ठीक है बहू कहकर हरिबाबू स्नान करने चले गये । जल्दी-जल्दी स्नान करने लगे एवं स्नान घर से देख रहे थे कि बहू अपने हाथ से अपने पिता को मिठाई, मछली खिला रही थी । जब हरिबाबू का भोजन का समय आया तो बहू ने एक छोटी सी मछली की टुकड़ी एवं दो रोटी सामने रख दी । न मिठाई, न वह प्यार मानों हरिबाबू अपने पुत्र के घर न आकर कहीं दुश्मन के घर आ गये थे । बेचारे हरिबाबू बिना भोजन किये चल पड़े । घर जाने पर उन्हें इतना सदमा लगा कि वे उसे बरदास्त नहीं कर सके । हृदयाघात से उनकी मौत हो गई । सभी पुत्र पिता को देखने आये, लेकिन रीतेश नहीं आया । अंतिम साँस लेते समय हरि बाबू के मुख से अनायास निकल पड़ा रीतेश, तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी । तुमने मेरी आशा को पुनः निराशा में बदल डाला ।



आशा उत्साह की जननी है । आशा में तेज है, बल है, जीवन है । आशा ही संसार की संचालक शक्ति है । जीवन में ऐसे अवसर भी आते हैं जब निराशा में भी आशा होती है । निराशा असम्भव को सम्भव भी बना देती है ।

-प्रेमचन्द

‘सुरेश ना सुरेशवा’

—श्री हरेराम प्रधान, व०ले०

उन दिनों की याद आते ही मन में रोमांच पैदा हो उठता है । हमलोग बच्चे थे । प्राथमिक स्कूल में पढ़ना शुरू किये थे । अगल-बगल में गाँव से भी बच्चे पढ़ने आते थे । जनवरी का महीना था । जाड़ा का समय था । उन दिनों सभी बच्चों को ऊनी स्वेटर नसीब नहीं होता था । सर्दी से बचने के लिए बच्चे गमछे से अपने सिर को ढँके रहते थे ।

एक दिन की बात है, मास्टर साहब बारी-बारी से एक-एक बच्चे से उसका नाम पूछ रहे थे । बारी-बारी से बच्चे अपना नाम एवं गाँव का नाम बता रहे थे । अचानक कोने में अकेले बैठे एक लड़के पर मास्टर साहब की नजर पड़ी । लड़का सब बच्चों से अलग बैठा था उसकी पोशाक भी कुछ भिन्न थी । माथे पर गमछा की पगड़ी बांधे था । मास्टर साहब ने उसे इशारे से खड़ा होने को कहा । वह खड़ा हो गया । खड़ा होने के बावजूद वह नीचे की तरफ देख रहा था । मास्टर साहब ने उसे सामने देखने को कहा । जब मास्टर साहब और उस लड़के की नजर टकराई, तो, मास्टर साहब बोले—तुम्हारा नाम क्या है ? लड़का उँची आवाज में बोला—‘सुरेशवा’ । मास्टर साहब सुनकर खिन्न हो गये । उसे समझाते हुए बोले—बेटा, ‘सुरेशवा’ नहीं सुरेश कहो तुम्हारा नाम सुरेश है ।

मास्टर साहब की बात से लड़का सहमत नहीं था । उसने मास्टर साहब से उलाहने के स्वर में पूछा—मास्टर साहब हमारे गाँव के

लोग मुझे 'सुरेशवा' कहते हैं । घर के लोग सुरेशवा कहते हैं । मेरे पिता जी, माँ, भाई-बहन चाचा-चाची सभी लोग 'सुरेशवा' कहते हैं । यहाँ तक कि (हमारी तरफ अंगुली से इशारा करते हुए) हमारे दोस्त भी मुझे सुरेशवा कहकर पुकारते हैं । तो फिर हमारा नाम सुरेश कैसे हुआ ? मास्टर साहब का माथा चकराया मन में सोचने लगे, लड़का ठीक कहता है । उसका कोई दोष नहीं है । दोष इस समाज का है, जिसने उसे सुरेश से सुरेशवा कहने को मजबूर किया है । उसी दिन शाम को मास्टर साहब सुरेश के घर गये और उन्होंने स्कूल की सारी घटना को उसके परिवार वालों को बताया । उन्होंने समझाया कि सुरेश को आप लोग सुरेशवा नहीं कहें । उसे घर के सब लोग सुरेश कहेंगे, तो गाँव के लोग भी सुरेश कहेंगे, और उसके दोस्त भी सुरेश कहेंगे, यहाँ तक कि सुरेश भी अपने को 'सुरेश' समझेगा 'सुरेशवा' नहीं ।

सुरेशवा सुरेश हो गया और हमारा बहुत अच्छा दोस्त बन गया । एक दिन सुरेश ने स्कूल आने एवं पढ़ने की घटना के बारे में विस्तार से बताया । मुझसे कहा, जानते हो दोस्त, हम पढ़ने के लिए स्कूल नहीं आते हैं । हमने उत्सुकता से पूछा, तब किसलिए स्कूल आते हो । उसने कहा फुटबाल (गेंद) खेलने के लिए आता हूँ । उसने आगे कहा चार बजे स्कूल से छुट्टी हो जाती है, तुम लोग गेंद खेलने के लिए घर से चले जाते थे, जबकि हम शाम तक भैंस चराते थे । तुम लोगों को गेंद खेलते देख मुझे भी गेंद खेलने की इच्छा हुई और हम बाबूजी से कहकर स्कूल आने लगे । बाबूजी भी बहुत खुश हुए कि पहले सुरेश स्कूल जाने के नाम पर तरह-तरह का बहाना बनाता था, पर अब तो वह खुद स्कूल जाने को तैयार हो गया है ।

मिडिल स्कूल तक हम लोगों ने साथ पढ़ा । हाई स्कूल में सुरेश नहीं पढ़ सका । हाई स्कूल के बाद हम कॉलेज में पढ़े एवं उसके बाद नौकरी भी करने लगे । इस बीच सुरेश से भेंट नहीं हो सकी ।

लगभग बीस साल के बाद बक्सर स्टेशन से उतर कर रिक्शा से हम बक्सर शहर आ रहे थे । थाना से जैसे ही गुजर कर आगे बढ़े किसी की कर्कश आवाज कानों में गूँजी । पीछे मुड़कर देखा—मेरा ही नाम लेकर कोई मुझे पुकार रहा था । मैं अभी सोच ही रहा था कि कौन हो सकता है । तभी एक सिपाही दौड़ा हुआ आया, और रिक्शा वाला को कड़े शब्दों में आदेश के साथ कहा कि रिक्शा घुमाओ और थाना ले चलो, जमादार साहब बुला रहे हैं । हम सोचने लगे कि क्या बात है, कोई गलती हो गई है कि थाना चलने को कह रहा है । खैर, तबतक रिक्शा थाना के नजदीक आ गया था । वर्दी पहने एक हट्टा-कट्टा नौजवान सामने खड़ा था । मूँछ कड़ी-कड़ी और चेहरे पर पुलिसिया रोब के साथ मुस्कुराहट । हम पहचानने की कोशिश ही कर रहे थे कि उसने मुझे गले से लगाते हुये उलाहने के स्वर में कहा, भाई पहचाने नहीं । अरे हम हैं, सुरेशवा ।

विश्वास नहीं हो रहा था कि यह वही सुरेश है, जिसे बीस साल पहले मास्टर जी ने यह समझाने की कोशिश की थी—कि तुम सुरेशवा नहीं सुरेश हो । वही सुरेश आज हमें अपनी पहचान 'सुरेशवा' के रूप में कराता है । सचमुच, इस उल्टे सा दिखने वाले शब्द में कितना अपनापन एवं गुजरे हुए दिनों की याद ताजा करने की कशिश है ।



“मित्रता अवसरवादिता नहीं है, वह तो सदा ही एक मधुर उत्तरदायित्व है ।”

—खलील जिब्रान

भाग्य का निर्माण कर्म से

-श्री दीपक दयाल प्रसाद,
वरिष्ठ लेखाकार

कर्म से ही भाग्य बनता
हमारे ग्रन्थों का पैगाम है
क्यूँ कोसते दुर्भाग्य को
तेरे दुष्कर्मों का परिणाम है ।

बिना सोचे कोई काम करके
भविष्य की अनदेखी करते
बुरे परिणाम जब सामने आए,
भाग्य को ही कोसते रहते ।

अपनी लापरवाही से जब
संकट आता जान को
भाग्य को मोहरा बनाकर
कोसते रहते भगवान को ।

कोई भी संकट झेलते हो
अपनी ही किसी अकर्मण्यता से
इस जन्म का अकर्मण्य न हो तो
पूर्वजन्मों की अकर्मण्यता से ।

जो भी व्यक्ति हुए महान
कर्म से ही किये भाग्य निर्माण
भाग्यवादी अँधेरे में भटककर
जीवन-पथ को किये फँसान ।

मत कोसो तुम दुर्भाग्य को
यह तेरा ही अंजाम हैं,
जरा गहराई से सोचो तुम



“ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में मनुज नहीं लाया है ।

अपना सुख उसने अपने भुजबल से ही पाया है ॥”

-रामधारी सिंह 'दिनकर'

फैलाव के बीच संकुचन

—श्री दयानन्द प्रसाद
वरिष्ठ लेखाकार

मनुष्य पृथ्वी पर सभी जीवों से उत्कृष्ट, उन्नत, बुद्धिमान एवं विवेकशील प्राणी माना जाता है । उसने विशालकाय जानवर को अपने वश में कर, समुद्र के तल में जाकर, पर्वतों की गगनचुम्बी शिखरों को समतल बनाकर, अंतरिक्ष में जाकर बस्ती बनाने का प्रयास प्रारम्भ कर अपनी उत्कृष्टता सिद्ध कर दी है । जीवन को सुखमय एवं आरामदायक बनाने का प्रयास हमेशा चलता रहता है । तुलनात्मक रूप में पूर्व की अपेक्षा मानव जीवन अधिक सुविधा संपन्न एवं आरामदायक तो हुआ है, परन्तु शांति में कमी आई है ।

मनुष्य को क्या चाहिए ? यह बताना बहुत ही कठिन है । प्रत्येक मनुष्य का स्वभाव अलग-अलग होता है । इसी कारण उसकी चाहत अलग-अलग होती है । कौन व्यक्ति क्या चाहता है, यह पता लगाना मुश्किल है । व्यक्ति की चाहत एवं आवश्यकता बदलती रहती है । समय, परिस्थिति सोच इत्यादि बदल जाने पर व्यक्ति की समझ, चाहत, आवश्यकता बदल जाती है । मनुष्य मन को समझाना, संतुष्ट करना असंभव है । मन ही मनुष्य को दौड़ाता है, कुछ करने के लिए प्रेरित करता है । इसी कारण से इस पृथ्वी पर अनेक प्रकार का कार्य-कलाप सतत चलते रहता है । मनुष्य अपनी चाहत, आवश्यकता के वशीभूत होकर दूसरों के हितों की अनदेखी करता है तथा इस प्रकार की हरकत

किस सीमा तक बढ़ेगी, निश्चित नहीं होता है । परन्तु, सरकार का यह कर्तव्य होता है कि स्वार्थी एवं मनफिरे किस्म के व्यक्तियों के गलत व्यवहारों एवं हरकतों पर नियंत्रण रखे तथा सामान्य लोगों के सामान्य आवश्यकताओं को पूरा करने का अधिकतम प्रयास करे ।

आज के दौर में मानव जीवन सुविधापूर्ण तो हुआ है पर उससे अधिक अशांत एवं अनिश्चित । वैसे तो परिवर्तन प्रकृति का मौलिक नियम है, परन्तु मनुष्य प्रत्येक परिवर्तन को अपने हित के पक्ष में देखना चाहता है । परन्तु ऐसा नहीं हो सकता । अपने हित के विरुद्ध होने वाले परिवर्तन के विरोध में आवाज उठाता है । इससे अन्यो को असुविधा होती है । फिर उस असुविधा से प्रभावित व्यक्ति एवं व्यक्तियों के समूह द्वारा अपनी असुविधाओं को दूर करने एवं सुविधा बहाल की मांग करता है, प्रदर्शन करता है तथा अन्य उपायों का सहारा लेता है । इस प्रकार असुविधा, अव्यवस्था, अनिश्चितता की कड़ी बन जाती है । इन कड़ियों को मनुष्य सदियों से सुलझाने का प्रयास करता आया है परन्तु सुलझते हुए भी अनसुलझा हुआ ही अपना अस्तित्व कायम रखता है ।

मनुष्य अपने जीवन को बेहतर बनाने के क्रम में कुछ चीजों में वृद्धि करता है, फैलाव करता है जैसे देश के सभी क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाना, शिक्षा के स्तर में वृद्धि करना, तकनीक में विकास करना, दूर संचार की सुविधाओं के क्षेत्र में फैलाव लाना, पड़ोसी देशों के साथ संबंध स्थापित कर व्यापार में वृद्धि लाना इत्यादि । परन्तु प्रत्येक फैलाव मनुष्य जीवन को बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध नहीं होता है । आजकल जिधर नजर उठाइये उधर ही फैलाव ही फैलाव

दिखता है । और इन फैलावों से जीवन अस्त-व्यस्त होता जा रहा है । इन फैलावों पर अंकुश लगाना बहुत कठिन है । ऐसे अनचाहा फैलाव से मानव जीवन, जीवन नहीं रह गया । आदमी जिंदा है, परन्तु वह सोचता है हमेशा मृत्यु के बारे में । कौन जाने कब और किस समय मृत्यु की गोद में समा जाए । ये अनचाहा फैलाव है बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी, बीमारी, बदमाशी, बहसीपन, बेहोशी, वैमनस्यता, बेईमानी, बर्बरता, बँटवारा, क्रोध, कामुकता, कामचोरी, कर्ज, कमीशन, धोखाधड़ी, सूरज की गर्मी, हिंसा, प्रतिहिंसा, इत्यादि ।

नौजवान बेरोजगार है । बेरोजगारी का मतलब होता है रोजगार में कमी होना इसकी मात्रा एवं संख्या में संकुचन आया है । इतनी सारी चीजों में फैलाव और रोजगार में संकुचन के बीच गहरा संबंध है । वैसे तो रोजगार के अवसर में संकुचन के भी कई निर्धारक तत्व होते हैं । यथा देश की संपदा का अकुशल दोहन, देश की सरकार का स्वरूप, आर्थिक नीति देश की जनशक्ति, शिक्षा का स्तर इत्यादि रोजगार के अवसर को प्रभावित एवं निर्धारित करती है । इन सभी कारकों से निर्धारित एवं संकुचित रोजगार प्रत्यक्ष रूप से पूर्व में वर्णित अनचाहा फैलाव के अस्तित्व के लिए जिम्मेवार है । बेरोजगार नौजवान धीरे-धीरे अपना मानसिक संतुलन खोता है, बर्बर होने लगता है । बात-बात पर घर हो या बाहर क्रोध करता है, फिर बदमाशी करता है, वैमनस्यता में वृद्धि होती है । घर में बँटवारा करता है, धन-अर्जन के लिए धोखाधड़ी का भी सहारा लेता है । फिर हिंसा-प्रतिहिंसा का सिलसिला चल पड़ता है । दूरदर्शन पर दिखाए

जाने वाले विभिन्न प्रकार के नंगापन एवं फैशन प्रदर्शनी से प्रभावित होकर आज का युवा वर्ग उसके अनुरूप व्यवहार करना चाहता है परन्तु भारत के सामाजिक एवं प्रशासनिक प्रतिबंध के कारण युवा मन आए दिन कामातुर होकर कुछ अटपटा हरकत कर बैठता है । कभी-कभी तो युवा काफी बर्बरता के साथ घटना को अंजाम देता है जो मानव जाति के लिए बहुत ही दुःखद है । इन शर्मनाक घटनाओं एवं अनचाहा फैलाव से मानव समाज को निजात दिलाना बहुत ही जरूरी है । इसमें देश के हर नागरिक के सहयोग की अपेक्षा है ।

रोजगार के संकुचन को फैलाव में बदलना होगा फिर सभी अनचाहे फैलाव में स्वतः धीरे-धीरे कमी आना प्रारम्भ होगा । दूरदर्शन पर प्रदर्शित नंगापन चाहे वह खेल मैदान से संबंधित हो या फैशन प्रदर्शनी से संबंधित । इन सभी में कमी लाना होगा । साथ ही सामाजिक रिवाज एवं मानसिकता में भी धीरे-धीरे फैलाव लाना होगा तभी संसार के अन्य देशों के साथ दौड़ में भाग ले सकेंगे ।

आशा उत्साह की जननी है । आशा में तेज है, बल है, जीवन है । आशा ही संसार की संचालक शक्ति है । जीवन में ऐसे अवसर भी आते हैं जब निराशा में भी आशा होती है । निराशा असम्भव को सम्भव भी बना देती है ।



संस्कृति उस दृष्टिकोण को कहते हैं, जिससे कोई समुदाय-विशेष जीवन की समस्याओं पर दृष्टि-निक्षेप करता है ।

-जैनेन्द्र कुमार

“नूरे-यार”

- श्री शिव शंकर तिवारी,
वरिष्ठ लेखाकार

दिल के दरिया में एक यार छिपा है यारों,

वो यार दिलदार, दिलबहार है यारों ।

जिसको पाने की मुद्दत से मशक्कत होती

वो नूरे-इलाही, जिगर के पार है यारो ।

दिल के दरिया में

जिसकी झलक पाने की तमन्ना ज्ञानी करते,

वो कोहिनूर, परछाईयों से दूर है यारों ।

दिल के दरिया में

रत्न-धन से पूरित इस नगरी में

मस्त नजारा, नजरो के उस पार है यारों ।

दिल के दरिया में

यार से करार परवान चढ़ने लगा है,

क्योंकि इस इकरार में अतिशय प्यार है यारों ।

दिल के दरिया में



‘गजल’ अरबी भाषा का शब्द है । इसका भावार्थ है ‘रमणी-संलाप’ अर्थात् जिस प्रेम में काम-वासना निहित हो उस प्रेम विषयक कविता को ‘गजल’ कहते हैं।”

-जगदीश नारायण त्रिपाठी

कौन जीता, कौन हारा

- श्री रामाधार राय, व०ले०

हॉलैण्ड की प्राकृतिक अनुपम छटा अविस्मरणीय रही है । देश की खूबसूरत नदियाँ, पहाड़ी गुफाएँ हमें कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य की याद दिलाती रही हैं । यही कारण है कि हॉलैण्ड का ट्यूलिस गार्डन बरबस हमें अपनी ओर खींचता रहा है और भारत के दर्शकों ने उसे साहित्यकार, फिल्मकार के चित्रणों में देखा है । आज भी फिल्म सिलसिला में टिलबुर्ग और ट्यूलिस गार्डन समेत वहाँ के प्राकृतिक दृश्यों को हमने कैद कर रखा है । यही नहीं, यहाँ के दो दार्शनिक चित्रकार रेब्रांट और विसेंट गोग हमारे देश के कई महापुरुषों के प्रेरणा-स्त्रोत रहे हैं । गोग का प्रकाश और अन्धकार की अवधारणा ने उन्हें जीवन के अंधरों से लड़ने की ताकत दी है ।

हॉलैण्ड की राजधानी एम्सटर्डम से 150 किलोमीटर दूर पहाड़ की घाटियों एवं एप्रिम नदी की गोद में बसा हुआ अनुपम प्राकृतिक छटा लिए एक गाँव ल्यूसिया है जहाँ सेना के ल० कर्नल ल्यूस का जन्म हुआ था जिन्होंने देश के आतंकवाद से लड़ते हुए एकेले डेढ़ सौ आतंकवादियों को मौत के घाट उतारते हुए स्वयं शहादत प्राप्त की थी । आज भी हॉलैण्डवासी उन्हें अपना नायक मानते हैं । ल्यूसिया की मुख्य सड़क पर उस महान् देशभक्त की आदमकम मूर्ति स्थापित है जिस होकर गुजरनेवाले प्रत्येक हॉलैण्ड वासी स्वतः नतमस्तक हो जाते

है । नायक ल्यूस की शहादत के उपरांत उनके परिवार में एक ग्यारह वर्षीय पुत्र एलियन, आठ वर्षीया पुत्री रोमो एवं पत्नी फिलिया हैं जिन्हें सारे लोग प्यार से मदर फिलिया पुकारते हैं । पुत्र एलियन में पिता का आदर्श और अनुशासन कूट-कूट कर भरा है । उन्हें छोटी आयु में पिता की मृत्यु के उपरांत घर में बड़े पुत्र होने का एहसास है और जिम्मेवारी का भी बोध है । पैतृक सम्पत्ति के नाम पर उन्हें कुछ एकड़ का फार्म है जिसपर हॉलैण्डवासी के समान अच्छी खेती करने का मदर फिलिया को शौक है । एलियन और रोमा जहाँ गाँव के पास के विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं, वहीं मदर बच्चों को विद्यालय भेजने के उपरांत स्वयं फार्म में जाकर गृहस्थी की नियमित देखभाल करती हैं और बच्चों के विद्यालय से लौटते समय घर लौट आती हैं । लेकिन, साथ में परिवार के दो सदस्यों की चर्चा नहीं करना बेमानी होगी जो अपनी कर्तव्यनिष्ठा और सत्यनिष्ठा से परिवार के सारे सुख-दुख में शामिल हैं । ये सदस्य हैं टॉमी कुत्ता और बिल्ली रॉकी । मदर जब फार्म जाती तो टॉमी उनके साथ जाकर उन्हें फार्म छोड़ देता फिर फार्म छोड़ घर वापस आ जाता एवं रॉकी घर की नियमित रखवाली करती । आज 7 नवम्बर है । स्व० ले० कर्नल ल्यूस का जन्मदिन । सूर्य अपनी सुबह की किरण ल्यूसिया की धरती पर बिखेर रहा है । खुला एवं साफ आकाश के नीचे गाँव की हरी-भरी घाटी, एप्रम नदी की शांत एवं सौम्य धारा के किनारे हरे-भरे खेत, खेत में लहकते पौधों के बीच सारा ग्राम उत्साहित है अपनी धरती के वीर पुत्र का जन्म दिन मनाने के लिए । इसी बीच समाचार आता है कि आठ बजे टीलवर्ग के गर्वनर

मि० डेकनर ल्यूस की मूर्ति पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने आनेवाले हैं। धीरे-धीरे मूर्ति के चारों ओर अपार भीड़ जमा हो जाती है। नियत समय पर मि० डेकनर पहुँचते हैं। 'ल्यूस अमर रहे' के नारों से ल्यूसिया का आसमान गुंजायमान हो जाता है। ल्यूसिया की भीड़ गर्वनर के स्वागत में खड़ी हो जाती है। भीड़ के पीछे मदर फिलिया अपने पुत्र एनियल और पुत्री रोमा के साथ शान्त एवं सौम्यता का प्रतीक बनी खड़ी है। गर्वनर डेकनर ल्यूस की वीरता का वर्णन अपने ओजस्वी भाषण में करते हैं। भाषण के समापन के उपरांत स्टेज पर वे मदर को बच्चों के साथ बुलाते हैं। गर्वनर जब उन्हें टीलवुर्ग शहर में मकान आवंटित करने एवं शहर में बच्चों की निःशुल्क शिक्षा अपलब्ध कराने की राजकीय घोषणा करते हैं तो तालियों की गड़गड़ाहट के बीच गर्वनर की घोषणा से ग्रामीण रोमांचित हो जाते हैं, परन्तु मदर के आँसू का प्रवाह रुकने का नाम नहीं लेता। गर्वनर मदर के नजदीक जाकर बड़े ही विनम्रतापूर्वक रोने का कारण पूछते हैं तब बड़ी मुश्किल से वे अपने को संभाल कर बोल पाती है कि अपने पति की शहादत की कीमत वे उनके आदर्शों का गला घोट कर नहीं लेना चाहती। वे ल्यूसिया की माँ, बहनों, भाइयों के साथ यहाँ की धरती पर अधिक खुशहाल हैं। उनका एक ही लक्ष्य है यहीं रहकर अपने पुत्र एनियल को सेना का कमिशनड ऑफिसर एवं पुत्री रोमा को अपने बलबूते मिलिट्री का डाक्टर बनाना। माँ फिलिया की अश्रुपूर्ण बातों पर ग्राम वासी मंत्र मुग्ध हैं और गर्वनर डेकनर भी अश्रुपूर्ण मुद्रा में काफी

प्रयास के बाद एक ही शब्द कह पाये धन्य है फिलिया एवं धन्य है ल्यूसिया की धरती जिसपर ऐसे वीर एवं ऐसी वीरांगना है ।

ऐसी ही धनी परम्पराओं में बँधी मदर फिलिया ग्रामीणों के गौरव के प्रतीक बन अपने बच्चों के साथ जीवन-यापन करती है । बच्चों के पठन-पाठन के बीच उनके फार्म की गृहस्थी काफी उत्साहपूर्ण एवं गौरव वाला कार्य था । किन्तु आज जब मदर फार्म से लौटी तो उनका शरीर तेज बुखार से तप रहा था । वह फार्म से लौटते ही बिस्तर पर लेट गयीं । मदर को बिस्तर पर लेटी शांत पाकर टैमी और रॉकी को यह समझने में जरा भी देर नहीं लगी कि आज कुछ ठीक-ठाक नहीं चल रहा है । अनयमितता और अशुभ का एहसास जानवरों को शीघ्र हो जाता है । अतः टैमी और रॉकी कभी घर में, कभी घर से बाहर होकर काफी उद्विग्नता पूर्वक रोमी और एनियल की प्रतीक्षा में दीख रहे थे । थोड़ी देर में रोमा और एनियल जब घर लौटे तो रॉकी उन्हें तेजी से झपटकर मदर के पास ले गई, टैमी तेजी से उनके पीछे-पीछे दौड़ने लगा । बच्चों ने मदर को तेज ज्वर से अचेतावस्था में देख आन्टी जेक्सी को बुलाया जिन्होंने मदर के सिर को पानी से धोकर कपाल में पानी से भिंगो-भिंगो कर लगातार कपड़े की पट्टी बदलती रही । धीरे-धीरे ज्वर कम होने लगा और मदर सामान्य होने लगी । घर में व्याप्त शांति और स्तब्धता को देख पड़ोस के लोगों को कुछ चिन्ता हुई । वे मदर फिलिया की ओर निकल पड़े । मदर को विछावन पर लेटी हुई, पास में बैठे एनियन, रोमा, टैमी एवं रॉकी तथा आन्टी जेक्सी के हाथ में पानी की पट्टी देख उनकी चिन्ता साकार हो गई । उन्होंने मदर के

लिए तुरन्त डाक्टर को बुलवाया । डाक्टर की डाक्टरी चिकित्सा से मदर तो चंगी हो गई किन्तु डाक्टर ने मदर की अस्वस्थता का कारण अत्यधिक कार्य का बोझ बतलाया और उन्हें आराम की हिदायत दी । पड़ोसियों ने उन्हें अत्यधिक कार्य करने से परहेज रखने को कहा तथा घरेलु कार्यों के लिए एक नौकरानी रखने की सलाह दी । उनलोगों ने मोरिया नामक एक 'मेड' की व्यवस्था माहवारी तन्खवाह पर कर दी । मदर ने कुछ दिनों तक आराम किया और मेड मोरिया के साथ अपना कार्य पूर्ववत् करने लगी । उनकी गृहस्थी सुचारु रूप से चलने लगी । बच्चे मोरिया को आन्टी के रूप में पाकर अत्यन्त खुश थे । मोरिया में मदर, एनियन और रोमा का असीम विश्वास बँध गया । कार्य के समुचित बँटवारे, मदर की तनाव रहित जिन्दगी, बच्चों का कोलाहल, टॉमी और रॉकी की चहल-कदमी से घर में खुशी का ठिकाना नहीं था । सुबह बच्चे अपनी पढ़ाई का कार्य करते, मोरिया किचेन के साथ मदर के कार्य में हाथ बँटाती । बच्चे समय पर विद्यालय जाते, टॉमी मदर को फार्म पहुँचाकर घर वापस आ जाता, रॉकी मोरिया के साथ घर में रहती । अपराह्न में मोरिया कुछ देर के लिए घर जाती और बच्चे एवं मदर के लौटने के पूर्व पुनः घर लौटकर दैनिक कार्य करती । इस प्रकार मोरिया भी टॉमी एवं रॉकी की तरह घर का एक सदस्य बन गई ।

मदर तनाव रहित हो गृहस्थी का कार्य खुशी पूर्वक कर ही रही थी कि एकाएक एक दिन उनकी शांति भंग होते देखी गई । जब वह फार्म से लौटने पर बच्चे का दूध-आधा एवं किचेन का सारा सामान

अस्त-व्यस्त पाया जब उसने मोरिया से इसका कारण पूछा तो उसने इसके लिए रॉकी को दोषी ठहराया । मदर रॉकी की चंचलता एवं चपलता समझ उसे भूलने का प्रयास करने लगी और उसे टालती गई। मोरिया में मदर एवं बच्चों का विश्वास धीरे-धीरे बँधने लगा । समर का महीना आया । धूप कड़ी निकली थी । हवा का बहना भी बंद था। प्राकृतिक छटाओं में भी उदासी साफ झलक रही थी किन्तु आज मदर को फार्म में सबेरे जाना था सो मोरिया को घर का सारा काम काज समझाकर बच्चों को विद्यालय जाने के पहले ही टॉमी के साथ फार्म चली गई । टॉमी उन्हें फार्म छोड़कर घर वापस आ गया । ऐनियल रोमी के साथ विद्यालय जा चुका था । टॉमी रौकी एक दूसरे पर उछल-कूद कर कभी लिपट कर अद्भुत कौतुहल दिखलाने लगे । प्रकृति का एक अनोखा दृश्य जिसमें एक-दूसरे का जन्मजात शत्रु अनुपम प्रेम के बंधन में बँधा हुआ है । मोरिया इन दोनों को आपस में क्रीड़ा करते छोड़ घर लौट चुकी थी । मदर के आज का फार्म का कार्य काफी जोखिम भरा था । अव्यवस्थित अनाज के फसलों को काट-छाँटकर सुव्यवस्थित करवाना, फार्म स्थित घर के नियमित कतार में रखवाना । ऊपर से सूर्य की तपती धूप । काफी तनावपूर्ण रहा आज का दिन / दिन ढलने लगा था । टॉमी फार्म में मदर को लाने पहुँच चुका था । फार्म का कार्य समाप्त हो चुका था । मदर टॉमी के साथ घर के लिए प्रस्थान कर गई । किन्तु, दिनभर का जोखिम भरा काम उनके सिर के तनाव की रेखाओं में स्पष्ट परिलक्षित हो रहा था । बच्चे विद्यालय से ही लौटे थे । मारिया भी कार्य करने नहीं पहुँची थी, किन्तु

यह क्या ? मदर किचेन में पहुँच कर आग-बबुला हो गई । कारण बच्चों के लिए दूध से भरा हुआ बर्तन आधा से भी कम पड़ा था और किचेन का सारा सुव्यवस्थित सामान अव्यवस्थित पड़ा था । मदर के क्रोध का ठिकाना नहीं रहा और उसने किचेन में पड़े हुए बेलन को उठाकर तेजी से रॉकी पर प्रहार करते हुए फेंकी जो वहाँ अकस्मात पहुँची हुई मोरिया के सिर में चोट लगी । वह चिल्लाते हुए भाग खड़ी हुई । उसे लगा कि उसकी चोरी पकड़ी गई और मदर ने जानबूझ कर उसपर प्रहार किया है । मारिया 'माफ करो, माफ करो' कहकर चिल्लाती हुई भागी जा रही थी कि अचानक रास्ते में विद्यालय से लौटते हुए एनियल और रोमा से टकरा गई । वह माफ करो, माफ करो चिल्लाते हुए पुनः भाग खड़ी हुई । बच्चे काफी दुःखी दिखने लगे । उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि आखिर घर में क्या हुआ ? बच्चे इस घटना से काफी मर्माहत थे । घर में पहुँचते क्रोध से जलते मदर के आभामंडल को देखकर वे लोग काफी दुःखी हो गये । एनियल ने मदर को संभालते हुए कहा-मॉम ! तुमने पिता जी के आदर्श को छोड़ दिया है । जब आन्टी मोरिया क्षमा माँग रही थी तो तुमने उन्हें चिल्लाते हुए क्यों जाने दिया ? पिता जी का आदर्श था गलती करने वालों के अपराध से बड़ा अपराध उन्हें माफ नहीं करना है । मदर को यह समझने में देर नहीं लगी कि दूध पीने से लेकर सारी गलतियाँ मोरिया ने की थी जिसके लिए वह मासूम रॉकी को जिम्मेवार ठहरा रही थी । इस गलती के आत्मबोध पर वह अपने आपको रोक नहीं पाई और फफक्-फफक् कर रोने लगी । रॉकी और टॉमी को गले से

लिपट-लिपट कर ऐसे विलाप कर रही थी, मानों माँ अपने अबोध बच्चों को मारने के उपरांत रो रही हो । रोमा और एनियल जितना ही उन्हें चुप कराने का प्रयास करते उनके क्रन्दन की तीव्रता उतनी ही बढ़ रही थी । उनके रोने की आवाज सुन पड़ोस के लोग भावी आशंकाओं के कारण दौड़ पड़े तो उन्होंने पाया कि मदर टॉमी और रॉकी को गोद में लिये विलाप कर रही थी । वे लोग इस रहस्य को समझ नहीं पा रहे थे । पुत्र एनियल पुत्री रोमी बाहर थी । मदर अपनी गोद में रॉकी और टॉमी से लिपट-लिपट कर लगातार रोये जा रही थी । यह अत्यन्त ही मनमोहक दृश्य था । आखिर में मदर की संवेदनशीलता फूट पड़ी और कारुणिक स्वर में बोली कि स्वामिभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा, प्यार एवं विश्वास से अभिभूत हो पशु ने अपनी सहज और असहज वास्तविकता का परित्याग कर दिया पर प्रेम एवं विश्वास के रिश्ते में बँधा मानव ने लोभ एवं संदेह को नहीं छोड़ा । मदर ने यह प्रश्न हमलोगों पर छोड़ दिया कि “कौन जीता, कौन हारा !”



कहानी तथ्यों की प्रदर्शनी नहीं है, किसी एक मानव-परिचय की पूरी तस्वीर है, समग्र चित्र है, उसमें हमारे जीवन के अनुभवों ने पूर्णता पाई है ।

-रवीन्द्रनाथ ठाकुर

क्या खूब चुटकुले

-संकलन, नरेन्द्र सिंह 'नाहर'

एक रसायन शास्त्री, एक भौतिकी का वैज्ञानिक और एक गणितज्ञ घूमते हुए एक तालाब के किनारे पहुँचे। भौतिकी का वैज्ञानिक बोला- “मैं तालाब का घनत्व ज्ञात करके आता हूँ।” और वह तालाब में कूद गया।

गणितज्ञ बोला, “मैं इस तालाब की गहराई नाप कर आता हूँ।” और वह भी तालाब में कूद गया। जब दोनों बहुत देर तक नहीं आये तो रसायन शास्त्री बोला-दोनों ही पानी में घुलनशील है।”

अध्यापक ने एक छात्र से कहा- ‘स्कूल इतना लेट कैसे आये ? छात्र ने कहा- ‘सर, गिर गया था, फिर लग गई।’

अध्यापक ने कहा - कहाँ गिरे ?

छात्र ने जबाब दिया-सर, बिस्तर पर गिर गया और फिर नींद लग गई।

बरसों से बिछड़े दो मित्र मिले। एक बोला- ‘दोस्त, तुम गंजे कैसे हो गए ?

दूसरे ने कहा- ‘इस जीभ के कारण ।’

‘वह कैसे ? पहले मित्र ने पूछा।

दूसरा मित्र - ‘यह चलती रही और जूते सिर पर पड़ते रहे।

‘मेरा तो यही ख्याल है कि किसी से कर्ज लेना ही आदमी की बर्बादी की वजह है।’

‘गलत समझते हो। कर्ज लेना कतई नहीं, बल्कि कर्ज चुकाना ही बर्बादी की वजह है।’

आपके साथ और, कौन-कौन लोग रहते हैं ?

‘मेरी तीन पुत्रियाँ, पत्नी और मेरी सास।’

तब तो आप तभी मुँह खोल पाते होंगे जब आप जम्हाई लेते होंगे।

एक मंत्री महोदय चुनाव से पहले एक गाँव में गये जहाँ बहुत गन्दगी थी। उन्होंने गाँव वालों से पूछा -‘क्यों भई, यहाँ कोई सफाई कर्मचारी नहीं आता है क्या ?

‘आता है श्रीमान्, हर पाँच साल बाद’-जवाब मिला।
क्योंजी! यह प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर में क्या अन्तर है?
श्रीमती जी ने अखबार पढ़ते हुए पतिदेव से पूछा।
वही, जो तुम्हारा मुँहसे पैसे माँगने और चुपचाप मेरी जेब से पैसे
निकाल लेने में होता है।’-पति का जवाब था।

प्रश्न - ‘आपकी पत्नी अबला है या सबला?’

उत्तर - ‘केवल बला।’

पत्नी (पति से)- अरे, यह सब्जी लाये हो? यह आलू बिल्कुल
गला हुआ, यह बैंगन बिल्कुल खराब और यह टमाटर तो बिलकुल ही
सड़ा हुआ। तुम जो भी चीज लाते हो, वह सड़ी-गली ही होती है।

पति - ‘तुम्हें भी तो मैंने ही लाया था।’

‘शादी और लॉटरी में क्या अन्तर है?’

‘लॉटरी में दुबारा भाग्य आजमाने का अवसर मिलता है, मगर
शादी में नहीं।’

‘पुरुष गंजे क्यों होते हैं?’

‘दिमाग से ज्यादा काम करते हैं।’

‘तो फिर स्त्रियाँ?’

‘इसी वजह से उनके मुँह पर बाल नहीं होते।’

शिक्षक - ‘जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि’, उक्ति की पुष्टि
के लिए उदाहरण दो।

रमन- ‘कवि सम्मेलन का रात में होना।’

एक बार एक अंग्रेज ने भारतीय से कहा - ‘आपके यहाँ तो
कोई गोरा है और कोई काला है। ऐसा क्यों? मेरे यहाँ तो सभी गोरे
हैं।’

भारतीय ने कहा - ‘गधे एक ही रंग के होते हैं और घोड़े
रंग-बिरंगे होते हैं।’



“हँसी की सुन्दर पृष्ठभूमि पर यौवन के सुमन खिलते
हैं। यौवन को तरोताजा रखने के लिए आप खूब हँसिये।”

-जॉर्ज बर्नाड शॉ

आयुर्वेदिक दवाएँ

वैद्य (डॉ०) रामेश्वर राम,
वरीय लेखाकार

1. सर्पदंश (Snakebite)

बरसात के दिनों में जहरीले सांप के बिल में पानी भर जाने कारण सांप उंची जगहों पर बसेरा ले लेते हैं खासकर ऊँचे पेड़ों की टहनियों में, उड़हुल फूल की डालियों के बीच छिपे रहते हैं।

4 बजे भोर में महिलाएँ/पुरुष पूजा के लिए फूल तोड़ने जाते हैं। अंधेरे में फूल तोड़ते-तोड़ते हड़बड़ी में विषैले सांप के मुँह भी नोच लेते हैं तब वे जहरीले सांप उन्हें उस लेते हैं। इसलिए बरसात के मौसम में सुबह उजाला हो जाने पर फूल की झाड़ी को ठीक तरह से देखा-ताक कर सावधानी पूर्वक फूल तोड़ना चाहिए।

जहरीले सांप के काटने पर प्राथमिक उपचार :-

1. सांप द्वारा काटे गये व्यक्ति के मुँह में एक मुट्ठी तुलसी का पत्ता डालकर तुरन्त चबाकर निगल लेने के लिए निर्देश देना चाहिए और उसके बाद 3-4 गिलास पानी पिला देना चाहिए ताकि सांप का विष हृदय एवं मस्तिष्क तक नहीं पहुँच सके।

2. सांप काटे हुए व्यक्ति को चित लिटाकर पीपल का पत्ता का ताजा डण्डल (टहनी) उनके कान में लगाना चाहिए। जब पीपल की टहनी द्वारा विष चूसे जाने की क्रिया शुरू होती है तब रोगी चीत्कार करने लगता है, इसलिए उसके हाथ-पाँव को कसकर पकड़ा जाता है।

10-10 मिनट पर पीपल का ताजा डण्डल तब तक बदलते रहना चाहिए जब तक रोगी को आराम न हो जाय(होश में आने तक)।

3. बरसात के मौसम में शाम को गोईठा (उपला) जलाकर उसपर पीला सरसों का खल्ली डालकर जलाने पर कडुआ धुँआ होगा। उस धुँआ के कडुआपन से घर के आस-पास झाड़ी में रहने वाले सांप भाग जायेंगे।

विषैला सांप एवं बिना विषैला सांप की पहचान :

(क) यदि किसी व्यक्ति को विषैला सांप ले तब उसे कच्चा चावल चबाने के लिए दीजिए। विषैला सांप काटने पर व्यक्ति का दांत मुलायम हो जाता है। वह कच्चा चावल चबा नहीं सकता है। तब समझ लीजिए कि उस व्यक्ति को विषैला सांप काटा है। उसके मुँह से फेन भी निकलना शुरू हो जायेगा।

2. मधुमेह(Diabetes)

डायबिटीज को एक और नाम से जाना जाता है। उसे ग्लाइकोजुरिया भी कहते हैं। हिन्दी में उसे बहुमूत्र रोग या मधुमेह कहा जाता है।

लक्षण -

1. जब बार-बार बहुत ज्यादा मात्रा में साफ पानी के जैसा पेशाब हो और रक्त में चीनी पैदा होता हो, वह पेशाब के साथ ज्यादा मात्रा में निकलने लगे जिस कारण शरीर में आधिक कठिनाई हो तो उसे मधुमेह (Diabetes) कहते हैं।

2. जब रक्त में चीनी की मात्रा बहुत ज्यादा बढ़ जाती है तब रोगी के सिर में दर्द होने लगता है, चक्कर आने लगता है और चलते चलते गिर पड़ता है। रोगी दुबला होने लगता है।

आज पूरे भारत में मधुमेह के रोगियों की संख्या विश्व में सबसे ज्यादा है। कारण मोटापा, मिठाई का ज्यादा सेवन।

मधुमेह का ज्यादा प्रभाव आँख और किडनी पर पड़ता है। मधुमेह के चलते आँख की रोशनी चली जाती है फिर आँख की रोशनी वापस नहीं लौटती है।

अंग्रेजी दवा खाली पेट में खाने पर उसका कुप्रभाव लीभर एवं किडनी पर पड़ता है इसलिए रोगी को चाहिए कि अंग्रेजी दवा के बदले आयुर्वेदिक दवा खाये।

निदान, चिकित्सा -

1. आयुर्वेदिक दवा मिस्टी मोचन पाउडर जो दुष्प्रभाव से मुक्त है। यह दवा जी०एम० रोड, पटना कम्पनी द्वारा बनी हुई है और सभी आयुर्वेदिक दवा दुकान में मिलती है। दिन में भोजन के 10 मिनट पहले एक चम्मच पाउडर खाकर ठंडा पानी पीना चाहिए। रात में भी भोजन के 10 मिनट पहले एक चम्मच पाउडर खाकर एक गिलास पानी पी लेना चाहिए। एक महीना दवा सेवा करने पर आश्चर्यजनक लाभ दीखने लगेगा।

2. सुबह मुँह धोकर सदा बहार के 7 पत्ती एवं 5 फूल धोकर चबा कर खाकर एक गिलास पानी पी लेने से फायदा होता है।

व्यायाम -

रोगी को सुबह शाम कपाल भांति व्यायाम करना जरूरी है और मैदान में तेजी से चलना चाहिए। साईकिल चलाना भी एक अच्छा व्यायाम है।

परहेज-

मीठा, खट्टा नहीं खाना चाहिए।

3. आयुर्वेद द्वारा ल्युकोरिया का निदान-

ल्युकोरिया महिलाओं में ज्यादा देखने को मिलता है। पीड़ित मरीज को पेशाब के रास्ते दूध की तरह उजला एवं कभी पीला, लाल रंग का श्राव होते रहता है।

कारण -

कब्ज, अधिक सहवास, कमजोरी, रक्तहीनता, कृमि रोग, रक्त संचालन में बाधा आदि से यह रोग हो जाता है।

लक्षण-

पीड़ित महिला के गाल धँस जाते हैं। बहुत दुबली पतली हो जाती है उसके पैर एवं हाथ में काफी जलन होती है उसे 101 डिग्री बुखार हमेशा रहता है। गर्मी के दिनों में भी रोगी गरम पानी से स्नान करती हैं चूँकि ठंडा पानी से उसे काफी ठंड लगती है।

अंग्रेजी दवा-

अंग्रेजी दवा खाने से कुछ समय के लिए रोग दब जाता है परन्तु बाद में फिर उभर जाता है।

शर्तिया इलाज-

छतवन पेड़ का छाल 25 ग्राम सिल्वट पर पीसकर उसे पानी में घोटकर पतला कपड़ा से छानकर सुबह खाली पेट में पीने से 15 दिनों में ल्युकोरिया समाप्त होते देखा गया है।

छतवन पेड़ की पहचान -

छतवन का पेड़ आम का पेड़ से छोटा पेड़ होता है इसके पत्ते आम के पत्तों की तरह ही होते हैं परन्तु सात पत्ते एक गुच्छा के रूप में होते हैं इसलिए इसे सप्तपर्णी भी कहा जाता है। सितम्बर, अक्टूबर माह में पेड़ पर उजला फूल गुलदस्ता की तरह फूल खिलते हैं और वातावरण में मीठी-मीठी भीनी-भीनी सुगंध बिखर जाता है। फूल झड़ने के बाद इसमें सहजन की तरह लम्बे-लम्बे फल भी लगते हैं। इसके छाल कुनैन की तरह हैं। जिस व्यक्ति को हमेशा बुखार रहता है वे 25 ग्राम छाल पीसकर पानी में घोट कर कपड़ा से छान कर 12 दिन पीने से ज्वर समाप्त होते देखा गया है।



“दिन के अन्त में दूध पिए, रात के अंत में जल पिए और भोजन के अन्त में मट्ठा पिए तो फिर दवा की क्या आवश्यकता है ?”

-अज्ञात

बाढ़ की विभीषिका

राणा प्रताप सिंह
सुपुत्र -श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'

बाढ़ निस्सन्देह युद्ध, महामारी, अग्निकांड तथा भूकम्प जैसी आकस्मिक आपदाओं की तरह एक संहारकारी विपत्ति है। अगर इसे समय पर नियंत्रित नहीं किया जाय तो अपार जान-माल की भीषण क्षति होती है। बाढ़ लोमहर्षक प्राकृतिक आपदा है। इसके कहर से बेशुमार जन-धन का विनाश और पुनर्निमाण में असीम धन का व्यय होता है। बाढ़ के सम्बन्ध में पौराणिक आस्था है कि यह परमात्मा द्वारा प्रेषित अभिशाप है। जब धरती पर पापाचार बढ़ जाता है तो ईश्वर दैविक विपत्तियों को धरती पर भेजते हैं ताकि विध्वंस का तांडव हो और मानव सदाचार में लीन होने के लिए सचेष्ट हो। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी कहा करते थे कि जब दुनियाँ में पाप अति की सीमा पार कर लेता है तब मनुष्य की दुर्दशा पर भगवान् आँसू बहाते हैं। उन्हीं आँसुओं के प्रवाह से बाढ़ की सृष्टि होती है। पर आधुनिक युग में बाढ़ को सरकार अथवा शासन की दुर्बलता सिद्ध करने की चेष्टा की गई है तथा इसे व्यक्ति द्वारा लादी गई विपत्ति माना गया है। विरोधी दल वाले बाढ़ को सरकार की बेपरवाह नीति बताते हैं तथा इस भीषण आपदा को राजनीति का आधार बनाकर सरकार के खिलाफ नारा लगाते हैं और जन-मन में असंतोष तथा विक्षोभ फैलाने का प्रयत्न करते हैं। चाहे जो

भी हो, बाढ़ मानव प्रदत्त हो अथवा प्रकृति प्रदत्त -यह मानव की सभ्यता को एक खुली चुनौती है, हमारी किसी-न-किसी प्रकार की असावधानी या दुर्बलता को दर्शाती है। यह हमें इशारा करती है कि मानव होने के नाते सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्द्धन हमारा प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए। बाढ़ की विभीषिका झेल रहे प्राणियों को बचाना हमारा परम एवं पुनीत कर्त्तव्य है।

बाढ़ सामान्यतः दो कारणों से आती है। जब धरती की किसी सतह पर आकस्मिक बारिश हो जाय और लगातार होती रहे तथा पानी निकलने का कोई दूसरा मार्ग नहीं हो तो जल चारों ओर इकट्ठा हो जाता है और जल-जमाव बाढ़ में तब्दील हो जाता है। इस प्रकार की स्थिति आमतौर पर शहरी इलाकों में होती है जहाँ पानी निकालने का साधन- लानी, नहर, भूमिगत नालियाँ आदि वर्षा के आकस्मिक आक्रमण को सहन नहीं कर पाती और क्षतिग्रस्त हो जाती है। कहीं आगे जाकर नालियाँ अवरुद्ध हो जाती हैं, जल-बहाव थम जाता है। दूसरा कारण है नदियों का अपनी सीमा में नहीं रह पाना जबकि पहाड़ी क्षेत्रों में वर्षा पुरजोर हो और निरन्तर हो रही हो।

हमारे बिहार प्रान्त में बाढ़ की भयावहता देखते ही बनती है। चारों तरफ जल ही जल। नदी नाले जल से आप्लावित, पुल विध्वंश, सड़के जलमग्न, यातायात का मार्ग अवरुद्ध, लोग बेघर, भूख-प्यास से तड़प रहे जीव, मानव की घोर दुर्दशा!

चतुर्दिक त्राहिमाम, त्राहिमाम , त्राहिमाम!!!
बिहार के दो भाग-उत्तरी बिहार और दक्षिणी बिहार। गंगा नदी इन दो

भागों को विभक्त करती है। उत्तरी बिहार के विभिन्न अंचलों में गंडक, बूढ़ी गंडक, कोशी, बागमती, कमला जैसी नदियाँ हैं जो वर्षा के जल से उगमती-उफनती हुई अपने स्रोत और प्रभाव का व्यापक और प्रचंड प्रदर्शन करती हैं जिसके कारण उत्तरी बिहार प्रायः ही बाढ़ से आक्रान्त-भयाक्रान्त रहता है। कोशी तथा गंडक विशेष रूप से ऐसी नदियाँ हैं जो बरसात के मौसम में प्रलय का दृश्य उपस्थित कर ही देती हैं। कोशी को तो बिहार का 'अभिशाप' ही कहा गया है। न जाने कितनी बार इसने अपनी प्रलयंकर धारा के मनुष्य के परिश्रम और उसकी साधना को चुनौती दी होगी।

बिहार में बाढ़ पर विहंगम दृष्टि डालें तो सन् 1954 ई० की बाढ़ तो उत्तर बिहार के सर्वनाश का कारण बन गई। उस वर्ष हिमालय और नेपाल की तराई में अपार वर्षा हुई जिसके फलस्वरूप समस्त नदियों में एक साथ बाढ़ आई। मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सारण, सहरसा, पूर्णियां इत्यादि जिले 14 से 28 जुलाई, 1954 तक समस्त देश के हिस्से से कटकर अलग हो गये। फसलें दह गई, अनगिनत धन-जन, पशु और घरों की बर्बादी हुई आवागमन के सभी मार्ग बन्द हो गये और उत्तरी बिहार में हाहाकार मच गया। इस आपदा में 9680 वर्गमील क्षेत्र बाढ़ग्रस्त हुआ, 8617 गाँव तबाह हुए और सरकारी गणना के अनुसार लगभग 1,79,451 व्यक्ति बाढ़ से आक्रान्त हुए। नदियों में बह जाने वाले पशुओं की संख्या लगभग दो हजार थी। अर्थशास्त्रियों के अनुसार यह क्षति 50 करोड़ से अधिक की थी। सन् 1961 में वर्षा की समाप्ति के लगभग जो

बाढ़ आई थी उससे समस्त देश प्रभावित हुआ था। बंगाल, पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा अन्य राज्यों की अपार क्षति हुई थी।

इधर दक्षिणी बिहार में सन् 1923 में बिहार की राजधानी पटना में फल्गू एवं पुनपुन के प्रकोप से बाढ़ आई थी जिसमें शहर की आबादी का चौथाई हिस्सा पूरी तरह से आक्रान्त था। सन् 1967 में पटना नगर के दक्षिणी हिस्से में बाढ़ का पानी घुस गया था जिसमें राजेन्द्र नगर, कदमकुँआ, कंकड़बाग इत्यादि हिस्से बुरी तरह से आक्रान्त हुए थे। सन् 1975 के अगस्त के आखिरी सप्ताह में जो भीषण बाढ़ पटना शहर में उमड़ आई थी उसमें लगभग एक अरब से भी ज्यादा रुपये की क्षति हुई थी। जीवन की रक्षा के लिए लोगों को मकान की छत पर भूख-प्यास, धूप, वर्षा इत्यादि झेलते हुए एक सप्ताह तक जीवन व्यतीत करना पड़ा था। आवागमन के सभी मार्ग अवरुद्ध हो गए थे। यदि सरकार तथा अन्य स्वयंसेवी संस्थाएँ समयोचित सहायता नहीं पहुँचा पाती तो पटना शहर एकदम वीरान हो जाता और उसे फिर से व्यवस्थित करने में महीनों का श्रम लग जाता।

इस वर्ष सन् 2007 के अगस्त माह में फिर बाढ़ की स्थिति आ गई है। उत्तरी एवं दक्षिणी बिहार फिर बाढ़ क्री चपेट में आ गया है। लगातार एक महीने से वर्षा होने के कारण, यहाँ वहाँ नालियों, नहरों में जल जमाव होने के कारण बाढ़ का दृश्य उपस्थित हो गया है। गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कोशी आदि नदियों में जल का उफान आने के कारण उत्तरी बिहार के विभिन्न जिलों में बाढ़ आ गई है। नेपाल की तराई में भी पुरजोर बारिश हो रही है जिसका जल बिहार में प्रवेश कर रहा है।

मुजफ्फरपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, खगड़िया, सहरसा, पूर्णियाँ, पटना इत्यादि शहरों में बाढ़ का पानी घुस गया है। पटना के विभिन्न इलाकों में बाढ़ का पानी थम गया है। दानापुर- खगौल रोड के

पश्चिमी इलाके-मठियापुर, चमारीचक, आशोपुर और न्यू ए0जी0 कॉलोनी में बाढ़ की स्थिति बनी हुई है। विगत 12 अगस्त, 2007 से 3-4 फीट पानी इकट्ठा है जिसका बहाव आगे की ओर अवरुद्ध है। यहाँ के निवासियों को आने-जाने में काफी मशक्कत करनी पड़ती है। प्रशासन का ध्यान इस ओर खींचा गया है, किन्तु जल बहाव अत्यंत धीरे-धीरे हो रहा है जिसमें महीनों लग सकते हैं।

बाढ़ निःसन्देह युद्ध, भूकम्प जैसी भीषण एवं संहारकारी आपदा है। बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों की सहायता करना मुख्य रूप से सरकार का कर्तव्य है। फिर भी, मानवीय समस्या होने के कारण प्रत्येक जन संस्था एवं व्यक्ति का भी यह धर्म बन जाता है कि वे तन-मन-धन से बाढ़ पीड़ितों की मदद करें। अभी पटना एवं बिहार के अन्य बाढ़ ग्रस्त इलाकों में केन्द्र तथा प्रान्तीय सरकार के साथ-साथ अनेक जन संस्थाओं ने भी सहायता का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। मनुष्य पर छाई हुई विपत्ति की बदली

को छिन्न-भिन्न करने हेतु यदि मनुष्य अपने साहस और पौरुष का क्रियाशील प्रदर्शन और समर्थ उपयोग नहीं करेगा तो आखिर कौन करेगा? हम और हमारी सरकार भले ही बाढ़ को नियंत्रित नहीं कर सकें, पर इतना तो जरूर किया जा सकता है कि हमारी सरकार उसके संहारकारी प्रभाव और लोमहर्षक विभीषिका को मिटा सके ताकि सभ्यता के ठिठके और थमे हुए चरण को आगे बढ़ाया जा सके।



“प्रकृति अपनी प्रगति और विकास में रुकना नहीं जानती।
हर अकर्मण्यता पर वह अपने शाप का ठप्पा लगाती है।”

-गेटे

हिन्दी पखवारा समारोह, 2006 : एक सिंहावलोकन

- हिन्दी कक्ष

राजभाषा विभाग, भारत सरकार एवं भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के कार्यालय से प्राप्त दिशा निर्देश के अनुपालन में इस वर्ष भी महालेखाकार के कार्यालय 'महालेखाकार भवन' में हिन्दी पखवारा का सफल आयोजन किया गया । यह आयोजन प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), बिहार, पटना एवं महालेखाकार (ले० एवं ह०), बिहार, पटना के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न किया गया ।

हिन्दी पखवारा समारोह का शुभारम्भ दिनांक-01/09/2006 को 11.00 बजे पूर्वाह्न में माननीय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) श्री अरुण कुमार सिंह के कर-कमलों से दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया । स्वागत भाषण श्री अमिताभ प्रसाद, उप महालेखाकार (लेखा परीक्षा) ने किया । प्रधान महालेखाकार महोदय ने हिन्दी पखवारा के औचित्य एवं राजभाषा हिन्दी की महत्ता पर प्रकाश डाला । उन्होंने इस पुनीत अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से समस्त कार्यालयीय कार्यों का निष्पादन हिन्दी में ही करने की अपील की । तत्पश्चात श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' ने साहित्यिक गीतों का गान कर सबों को मंत्रमुग्ध कर दिया । पहले दिन के कार्यक्रम के समापन पर श्री उदय शंकर प्रसाद, उप महालेखाकार (ले० एवं ह०) ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

दिनांक 2/9/2006 और 3/9/2006 क्रमशः शनिवार एवं रविवार होने के कारण कार्यालय बंद था । दिनांक-04/09/2006 से 13/9/2006 तक हिन्दी कार्यशालाएँ एवं चिभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा-हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, हिन्दी संक्षेपण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता, हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया जाय ।

दिनांक-14/09/2006 का 'हिन्दी दिवस' समारोह को भव्य आयोजन किया गया । यह समारोह दो चरणों में हर्षोल्लास से मनाया गया । प्रथम चरण में श्री रमेश प्रसाद कंठ, कल्याण अधिकारी ने समारोह में उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों एवं अतिथियों का स्वागत भाषण किया । श्री राजू कुमार सिंह ने समारोह का संचालन करते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाया ।

समारोह की अध्यक्षता प्रधान महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह ने की । तत्पश्चात 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में प्राप्त माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार के संदेश का वाचन श्री विक्रम डी0 मुरुगराज, उप महालेखाकार (लेखा परीक्षा) ने किया ।

प्रधान महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह ने भी अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा "हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा है । हमारे यहाँ हिन्दी में ही अधिकांश कार्य किये जाते हैं । हिन्दी आज राष्ट्रीय से अन्तर्राष्ट्रीय भाषा भी बन चुकी है । इसके सम्यक विकास में हमलोगों को और ज्यादा प्रयत्न करना होगा ताकि यह पूरे विश्व में अपनी

गरिमा प्राप्त कर सके ।” इस सुअवसर पर उन्होंने हिन्दी को सशक्त बनाने एवं इसे शत प्रतिशत उपयोग में लाने की अपील की ।

‘हिन्दी दिवस’ समारोह के द्वितीय चरण में भव्य कवि-गोष्ठी का आयोजन किया गया । इस कवि-गोष्ठी में आमंत्रित कविवृन्द-डॉ० खगेन्द्र ठाकुर, डॉ० रवीन्द्र राजहंस, डॉ० ललित कुमुद, श्री आलोकधन्वा, श्री राम उपदेश सिंह, श्री सत्यनारायण, श्री कमला प्रसाद, श्री मृत्युजंय मिश्र ‘करुणेश’, श्रीमती सुभद्रा वीरेन्द्र, श्री सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री उदय चन्द्र झा ‘विनोद’, श्री महेन्द्र झा और श्री नरेन्द्र सिंह ‘नाहर’ ने अपने कविता-पाठ से श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया । श्रोताओं ने भी तालियों की गड़गड़ाहट से कवियों का मान-सम्मान किया । कवि मंच की अध्यक्षता लोकप्रिय कवि समालोचक डॉ० खगेन्द्र ठाकुर ने की तथा मंच संचालन सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं उद्घोषक श्री सत्यनारायण ने की ।

समारोह के अंत में उप महालेखाकार (ले० एवं ह०) श्री उदय शंकर प्रसाद ने समारोह का सफल बनाने में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा सादर आमंत्रित कवियों और अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सबों का धन्यवाद ज्ञापन किया ।

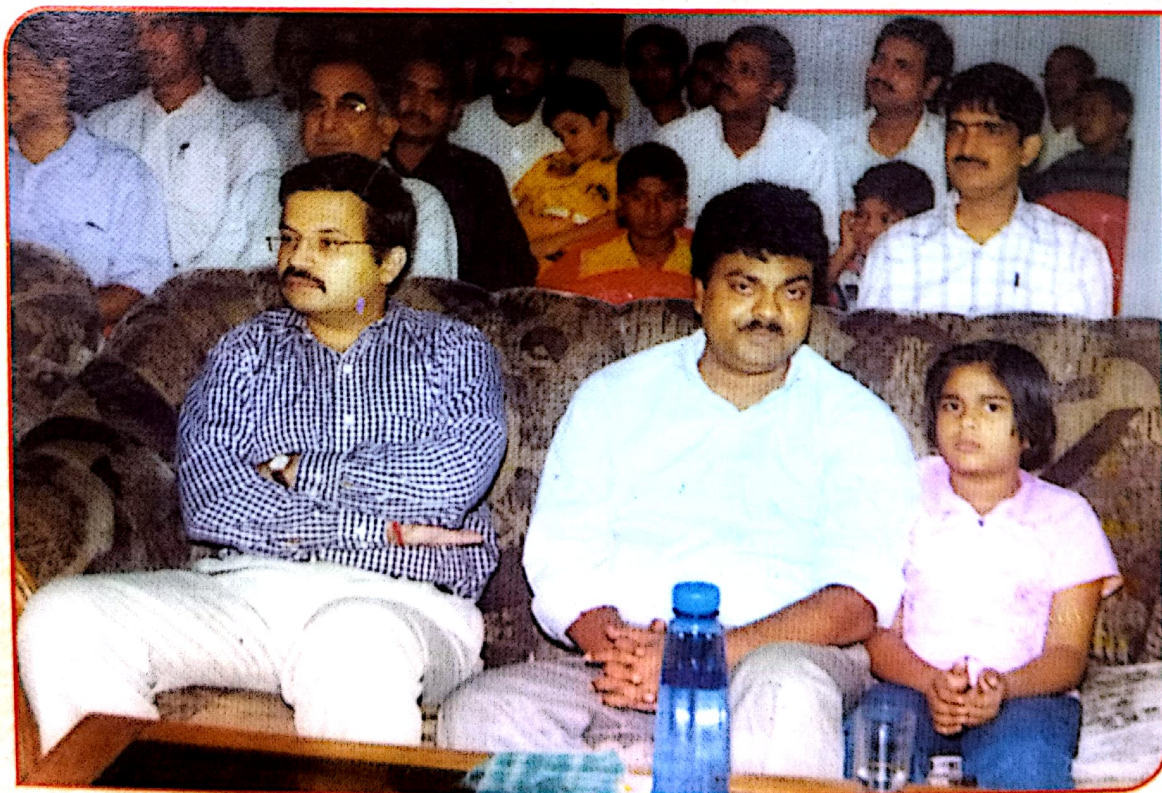


“हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली-श्रेणी में समासीन हो सकती है ।”

—मैथिलीशरण गुप्त



‘स्वाधीनता दिवस’ के सुअवसर पर आयोजित समारोह में गायन-वादन करते हुए कलाकारवृन्द।



‘स्वतंत्रता दिवस समारोह’ का आनन्द लेते हुए वरिष्ठ उपमहालेखाकार श्री उदय शंकर प्रसाद, उपमहालेखाकार श्री अमिताभ प्रसाद तथा अधिकारी एवं कर्मचारिवृन्द ।



त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का लोकार्पण करते हुए सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार डा० खगेन्द्र ठाकुर । साथ में हैं प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) श्री अरूण कुमार सिंह एवं महालेखाकार (ले० एवं ह०) श्री गौतम गुहा ।



त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' का लोकार्पण करते हुए सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि श्री आलोकधन्वा । साथ में हैं प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) श्री अरूण कुमार सिंह एवं महालेखाकार (ले० एवं ह०) श्री गौतम गुहा ।